विशेष कथा

—:*॥ वातापि राक्षस पेट मे पचि गेल ! ॥*:—

[प्रो० श्रीरामदेवझा, दरभंगा]

अधिक भोजन कऽ लेला पर कतेक गोटा केँ देखैत छियन्हि जे पेट हँसोथैत मन्त्र पढ़ऽ लगैत छथि। ओ मन्त्र अगस्त्य मुनिसँ सम्बन्धित अछि। अगस्त्य मुनि आतापि एवं वातापि राक्षस केँ गीड़ि गेलाह। सौंसे समुद्र केँ सोखि गेलाह। ई मुनि कऽ अहाँ केँ सौंसे कथा जनबाक मोन भऽ गेल होयत। एहिठाम केवल वातापिवला घटना कहैत छी।

बहुत प्राचीन समय मे वातापि आ इलवल नामक दुइ गोट राक्षस छल। ओ लोक सभकेँ बड़ दुख दैत छलैक। वातापि केँ ई वरदान भेटल छलैक जे ओकरा खंडी खंडी कऽ देल जयतैक तैयो जीबि जायत। इलवल ब्राह्मणक रूप धारण कए कए मुनि केँ कहैत छलनि जे हमरा आङन मे आइ श्राद्ध अछि से नोत दैत छी, मुनि नोत मानि लैत छलथिन्ह एमहर वातापि छागरक रूप धऽ लैत छल। इलवल ओहि छागर केँ मारि कए रान्हि कए हुनका लोक निकेँ खुआ दैत छलन्हि। खयला पिउलाक बाद इलवल मुनि लोकनि सँ पुछैत छलनि-अहाँ सभक मोन भरल ? मुनि कहैत छलथिन्ह 'खूब, मोन भरि भोजन कयलहुँ।'

तखन इलवल अपन भाइक नाम धऽ कऽ सोर पाड़ैत छलैक जे 'वातापि रौ ! कतए छेँ ! एमहर आ !' बस वातापि मुनिक पेट मे जीबि जाइत छल आ पेट फाड़ि कए बाहर आबि जाइत छल। मुनि मरि जाइत छलाह। एहि रूपेँ ओ तपोवनक ओ... मुनि केँ मारि देलकन्हि। ओकर उपद्रव देखि ... ओहि तपोवनक मुनि लोकनिमे पड़ाहि ... गेलन्हि। ई समाचार अगस्त्य मुनि केँ सेहो भेट... न्हि। एक दिन संयोग सँ इलवल ब्राह्मणक रूप धए अ... अगस्त्य मुनि केँ सेहो नोत देलकन्हि। ओहो नो... मानि लेलथिन्ह। इलवल अपन स्वभावक अनुसा... छागर बनल वातापि केँ मारि कए रान्हि कए हुनका खुआ देलकन्हि। खयबा काल मे इलवल बड़ विन... देखबैत रहलन्हि। अगस्त्य मुनि सेहो खाइत-खाइ... एकटा कथा कहलथिन्ह जे पहिने हमरा अपच भ... जाइत छल। तखन गणेशजीक पूजा कयबहुँ। ओ... ओ प्रशन्न भए कए वरदान देलन्हि जे 'अहाँ जे कि... खायब से पचि जायत।' खयलाक उपरान्त विधि... अनुसार इलवल पुछलकन्हि जे की अहाँक मोन भ... भेल ? अगस्त्य मुनि पेट पर हाथ फेरैत कहलथिन्ह— बड़ स्वादिष्ट छल-'अहाँक भोजन। पेट मे जाइते ... पचि गेल !' तखन इलवल अपन भाइक नाम धए ... सोर पाड़लकैक-वातापि ! कतए छेँ ? एमहर आ ... ई सूनि कए अगस्त्य मुनि केँ हँसी लागि गेलन्हि ... ओ हँसैत कहलथिन्ह-हौ ! इलवल ! आब ओहि ... कहियो घूमि कए नहि औतह। ओ तँ हमर पेट... आगि मे जरि गेलह।'

इलवल केँ बड़ आश्चर्य भेलैक। कतेको बेर...

…तापि राक्षस पेट मे पचि गेल ! ॥*:—

[प्रो॰ श्रीरामदेवझा, दरभंगा]

…ऽ लेला पर कतेक गोटा केँ
…हँसैत मन्त्र पढ़ऽ लगैत
…स्य मुनिसँ सम्बन्धित अछि।
… एवं वातापि राक्षस केँ गीड़ि
…केँ सोखि गेलाह। ई सुनि कऽ
…जनबाक मोन भऽ गेल होयत।
…तापिवला घटना कहैत छी।
…मय मे वातापि ओ इलवल
…स छल। ओ लोक सभकेँ बड़
…तापि केँ ई वरदान भेटल छलैक
…डी कऽ देल जयतैक तैयो जीबि
…ह्मणक रूप धारण कए कए मुनि
… हुनका आङन मे आइ श्राद्ध
…त छी. मुनि नोत मानि लैत
…वातापि छागरक रूप धऽ लैत छल।
…न्हि कए हुनका
…पिउलाक बाद
…—अहाँ सभक
…कहैत छलथिन्ह 'खूब, मोन भरि
…
… अपन भाइक नाम धऽ कऽ सोर
…'वातापि रौ! कतए छेँ! एमहर
…य मुनिक पेट मे जीबि जाइत छल
… बाहर आबि जाइत छल। मुनि

मरि जाइत छलाह। एहि रूपेँ ओ तपोवनक कतेको मुनि केँ मारि देलकन्हि। ओकर उपद्रव देखि कए ओहि तपोवनक मुनि लोकनिमे पड़ाहि लागि गेलन्हि। ई समाचार अगस्त्य मुनि केँ सेहो भेटल-न्हि। एक दिन संयोग सँ इलवल ब्राह्मणक रूप धए कए अगस्त्य मुनि केँ सेहो नोत देलकन्हि। ओहो नोत मानि लेलथिन्ह। इलवल अपन स्वभावक अनुसार, छागर बनल वातापि केँ मारि कए रान्हि कए हुनका खुआ देलकन्हि। खयबा काल मे इलवल बड़ विनयं देखबैत रहलन्हि। अगस्त्य मुनि सेहो खाइत-खाइत एकटा कथा कहलथिन्ह जे पहिने हमरा अपच भए जाइत छल। तखन गणेशजीक पूजा कयबहुँ। ओ ओ प्रशन्न भए कए वरदान देलन्हि जे 'अहाँ जे किछु खायब से पचि जायत।' खयलाक उपरान्त विधिक अनुसार इलवल पुछलकन्हि जे की अहाँक मोन तृप्त भेल? अगस्त्य मुनि पेट पर हाथ फेरैत कहलथिन्ह— बड़ स्वादिष्ट छल-'अहाँक भोजन। पेट मे जाइते देरी पचि गेल!' तखन इलवल अपन भाइक नाम धए कए सोर पाड़लकैक-वातापि! कतए छेँ? एमहर आ!' ई सूनि कए अगस्त्य मुनि केँ हँसी लागि गेलन्हि। ओ हँसैत कहलथिन्ह-हौ! इलवल! आब ओहर भाइ कहियो घूमि कए नहि औतह। ओ तँ हमर पेटक आगि मे जरि गेलह।'

इलवल केँ बड़ आश्चर्य भेलैक। कतेको भेर

बज़ौला पर जखन वातापि नहि अयलैक तँ ओकरा बड़ तामस भेलैक। एहि तामस पर ओ अगस्त्य मुनि केँ मारि देबाक लेल आक्रमण कए देलकन्हि। अगस्त्यो मुनि केँ बहुत क्रोध भए गेलन्हि। हुनका आँखि सँ क्रोधे आगि बरिसए लगलन्हि। इलवल सेहो ओहि मे जरि कए भस्म भए गेल। मुनि लोकनि आदन्द पूर्वक तपोवन मे रहए लगलाह।

यैह थीक अगस्त्य मुनि ओ वातापि राक्षसक कथा।

चाउ सँ होरी सुनाउ

[पं० सुरेशझा 'साँढ़' शिवगंज, राजस्थान]

अररर मचलं रंग भरि देश।
सुवर्णक भेल नियंत्रण वेश॥
रंगक घोलम घोल मे कम्युनिस्ट के जेल,
सोसलिस्ट साढ़ संग मिलिक तरह तरह केर खेल।
स्वतंत्र दल राजाजी फरेश-सुभाव नित नव नव हो सन्देश-
अछि मचल रंग भरि देश॥

चलल चीन भारत दिशि जैखन हो हल्लाक डम्फ बाजि गेल,
भारतवर्षक कोने कोन मे सररर सररर भेल।
केनेडी मैक मिलन सोहेस जोगीरा गाओल मदतक वेश
अछि मचल रंग भरि देश॥

...वतिभिक्षां देहि' मुरारक—शब्द सोन हथिआर,
...रतबर्षक जनता माला दान कयल निजहार।
...ट्र के मन्त्री सभ नकलेश पहिरिकए नाच देखथि रेश,
अछि मचल रंग भरि देश॥

कोलम्बो प्रस्ताव मोहिनी देखि नर्तकी गूढ़,
लड़निहार दल दूनू दबकल किंकर्त्तव्य विमूढ़
लूटि मे लटवा नफा भरेश अयूब के चाहिअनि काश्मीर फस
अछि मचल रंग भरि देश॥

राजस्थान जवान जंग मे पंजाबक अड़ताब,
बढ़त बिहारीं यू. पी. उठल देखि असामक घाव,
भारतक आइ चतुर्दशान प्रान्त चीन सँ खेलक हेतु अशान्त
अछि मचल रंग भरि देश।